International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. – 2, March – 2022, Special Issues
2022

सतना जिला के चित्रकूट धार्मिक पर्यटन स्थल का अध्ययन

सुजीत कुमार चौहान
शोधार्थी भूगोल स्कूल ऑफ सोशल साइंस देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, तक्षशिला परिसर इंदौर (म.प्र.)
डॉ. सुभान सिंह बघेल
प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, महा. भोज शास. सना. महाविद्यालय (धार)

शोध सारांश :– बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक तीर्थस्थल सतना जिले में पाये जाते हैं। इन तीर्थों में से मुख्य रूप से चित्रकूट में विद्यमान धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल हैं। इन्हीं बिन्दुओं को इस शोध पत्र में प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द :– सतना, चित्रकूट, धार्मिक, पर्यटन, विन्ध्य, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आदि।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत शोध पत्र में अनेक विस्मयकारी दृश्यों से युक्त चित्रकूट की पहाड़ियाँ विन्ध्य की उत्तरी श्रृंखला का अंग हैं। इसमें शान्त दुर्गम क्षेत्र, कलकल करती पहाड़ी नदियाँ और झरने तथा गहन वन दर्शनार्थी को अपूर्व आनन्द प्रदान करते हैं। चित्रकूट उत्तर भारत का प्राचीनतम् आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक सुषमा सम्पन्न स्थान है, जो गृहस्थों के लिए तीर्थ स्थान है, वीतरागी सन्त–महात्माओं के लिए तपोवन और शैलानियों के लिए उत्तम पर्यटन स्थल हैं–

सुर्वणं कूटं, रचिताभ कूटं, माणिक्य कूटं, मणिरत्न कूटं
अनेक कूटं, बहुवर्षकूटं श्रीचित्रकूटं शरणं प्रपद्ये।।

मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित चित्रकूट उत्तर प्रदेश के चित्रकूट धाम (कर्वी) जिला तथा मध्य प्रदेश के सतना जिले की सीमा पर स्थित है। चित्रकूट की गणना भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों में की जाती है। रामभक्तों की धारणा है कि यहाँ आज भी राम का निवास है। इसीलिए इस स्थान को चित्रकूट धाम कहा जाता है। वाल्मीकि[1] का कथन है कि जब तक मनुष्य चित्रकूट शिखरों का अवलोकन करता रहता है, तब तक वह कल्याण मार्ग पर अग्रसर होता रहता है और उसका मन, मोह, और अविवेक से आच्छादित नहीं होता। श्री राम ने यहाँ बारह वर्षों तक निवास किया था।

महाभारत में उसे मन्दाकिनी नदी के तट पर सिथत एक तीर्थ बताया है। इस तीर्थ का वर्णन करते हुए कहा गया है कि चित्रकूट जनस्थान तथा मन्दाकिनी के जल मे स्नान करने वाला व्यक्ति राजलक्ष्मी से सेवित होता है। भागतवपुराण (5.19.16), ब्रह्माण्डपुराण (2.16.23), मत्स्यपुराण (13., 39, 52, 69) और अध्यात्म रामायण (2.9.77) में भी चित्रकूट का उल्लेख मिलता है। अब्दुलरहीम खानखाना मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक थे किसी कारण अकबर से असंतुष्ट होने के कारण वे चित्रकूट में रहने लगे थे। इस सम्बन्ध में निम्नांकित दोह बहुत प्रसिद्ध है –

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा परत है, सो आवत यहि देश।।

चित्रकूट में 33 प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं। इनमें से विशिष्ट स्थलों का वर्णन इस प्रकार है –

रामघाट :– मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित रामघाट निरन्तर परिवर्तनशील और जीवन्त धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र है। नदी के किनारे 24 पक्के घाट हैं, जिनमें रामघाट और भरतघाट सर्वोपरि हैं। सूर्य की पहली किरण के साथ ही सभी आयु के भक्तों द्वारा मन्दाकिनी में स्नान और भगवद भजन से रामघाट गुंजायमान हो उठता है। सीाी युगों में रामघाट अगाध और शाश्वत आस्था का साक्षी रहा है। घाट के ऊपर यज्ञवेदी मंदिर है। नुश्रुति है यहाँ पर ब्रह्मा ने यज्ञ किया था। यहाँ राम, लक्ष्मण और सीता ने स्थान किया था, जिसका रामचरितमानस में इस प्रकार उल्लेख किया गया है:–

चित्रकूट महिमा अमित की महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरित वर सिय समेत दोउ भाइ।। 2. 132

रामघाट पर ही तुलसीदास की एक प्रतिमा स्थापित की गई है। यहीं पर तोतामुखी हनुमान भी विराजमान हैं। तुलसीदास की प्रतिमा से कुछ दूरी पर तुलसीदास की पर्णकुटी थी जहाँ निवास करते हुए वे मन्दाकिनी में स्नान करते थे और रामकथा का प्रवचन करते थे। संध्या के समय रामघाट पर मन्दाकिनी की भव्य आरती की जाती है, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का अवसर होता है।

मत्तगजेन्द्र (शिव) मन्दिर–मत्तगजेन्द्र का मन्दिर रामघाट के समीप ही एक टीले पर बना है। अब मन्दर

[1] यावता चित्रकूटस्य नरः श्रृंगाण्यवेक्षते। कल्याणानि समाधन्ते न पावे कुरुते मनः। 2.54.30

तक जाने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था कर दी गई है। मत्तगजेन्द्र चित्रकूट के तीर्थ देवता हैं। भगवान् राम ने उन्हीं की आज्ञा प्राप्त कर यहाँ पर्णकुटी का निर्माण किया था। पौराणिक मान्यता है कि ब्रह्मा ने अपने यज्ञा की रक्षा के लिए क्षेत्रपाल के रूप में इस मन्दिर की स्थापना की थी। तुलसीदास का कथन है कि जब सीता ने सेना सहित भरत के चित्रकूट आगमन का स्वप्न देखा उस समय उन्होंने यहीं पर शिव का पूजन किया था–

अस कहि बंधु समेत नहाने।
पूजि पुरारि साधु सनमाने।।

(रामचरितमानस 2.225.4)

मन्दिर के प्रांगण में तीन विभिन्न आकार की वेदियाँ हैं। ये ब्रह्मा की यज्ञवेदयिाँ हैं। प्रांगण के अन्त में गर्भग्रह है सामने बालि, सुग्रीव की यदुरत प्रतमाएँ हैं। मन्दिर से नीचे का दृश्य अत्यन्त मनोरम प्रतीत होता है और पर्यटक उसे देखकर मंत्र–मुग्ध हो जाता है।

पर्णकुटी – यह स्थान अत्यन्त प्राचीन है। श्री राम के चित्रकूट आगमन पर उनके आवास के लिए यह पर्णकुटी बनाई गई थी, जिसका वर्णन तुलसीदास ने इस प्रकार किया है– रामघाट पर लक्ष्मण ने एक ऐसे स्थान का चुनाव किया, जो नदी तट के उत्तरी किनारे पर एक टीले पर था और उसके चारों ओर धनुषाकार एक नाला था। श्रीराम को भी यह स्थान रुचिकर लगा –

रघुवर कहेउ लखन भल घाट्। करहु कतहुं अब ठाहर झाटू।।
लखन दीख पय उतर करारा। चहुं दिश फिरउ धनुष जिमि नारा।।

× × × ×

अस कहि लखन ठाउं देखरावा। थलु विलोकि रघुवर सुख पावा।।

× × × ×

लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि वेष जनु रति रितुराज समेत ।।

(रामचरितमानस, 2.133.1.3)

अब इस कुटी के स्थान पर गुम्बदाकार सामान्य आकार का एक मन्दिर है जिसके चारों ओर खुला बरामदा और बीच में गर्भग्रह है। इसमें सीताराम की मूर्तियाँ विराजमान हैं। उनके दोनों ओर लक्ष्मीनारायण और गौरीशंकर की प्रतिमाएँ हैं। इस मन्दिर को पर्ण कुटीर कहते हैं।

यज्ञवेदी – पर्णकुटी के दक्षिण में यज्ञवेदी नामक स्थान है, जहाँ पर ब्रह्मा ने यज्ञ किया था। तभी से यह स्थान वेदी के नाम से प्रसिद्ध है।

बड़ामठ :– पन्ना महाराजा अमानसिंह ने जब चित्रकूट के उद्धार का विचार किया तब उन्होंने अपने निवास के लिए एक भन का निर्माण कराया। चित्रकूट के समस्त भनों से बड़ा होने के कारणइसे बड़ामठ अथवा मढ़ कहते हैं। यह स्थान रामानुज सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। यह स्थान पन्ना महाराजा के गुरु मथुराचार्य का निवास भी है। क्योंकि गुरु गृहस्थ थे, अतः इसे ग्रहस्थ गद्दी भी कहते हैं। यह गृहस्थ गद्दी 1815 ई. में स्थापित हुई थी, जिसके प्रमाणस्वरूप यहाँ पर अमानसिंह का एक ताम्रपत्र विद्यमान है। अब यहाँ पर राम दरबार के विग्रह की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। इस स्थान से मंदाकिनी तट का मनोरम प्राकृतिक दृश्य दृष्टिगोचर होता है, जो पर्यटकों के लिए अत्यन्त मनभावन होता है।

राघव प्रयाग :– यह स्थान मंदाकिनी नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यहाँ पर तीन नदियों मन्दाकिनी, पयश्विनी तथा सावित्री नदियों के संगम की अनुश्रुति प्रचलित हैं। जब श्रही राम को पिता की मृत्यु का समाचार मिला, तब उन्होंने इसी स्थान पर पिता का श्राद्ध किया था।[2] तभी से इस स्थान को राघव प्रयाग कहा जाने लगा और यहाँ पर पिण्डदान करने की परम्परा चल पड़ी। पौराणिक अनुश्रुतियों में इस स्थान का महत्व तीर्थराज प्रयाग से भी बढ़कर बताया गया है। कथन है कि माघ मास में शुक्ल पक्ष की सप्तमी को तीर्थराज प्रयाग स्वयं यहाँ आते हैं। पूरे वर्ष भर तीर्थयात्रियों का पाप हरण करने से तीर्थराज का शरीर अपवित्र हो जाता है। अतः वह उपर्युक्त बिन्दु में स्नान कर अपना शरीर पवित्र करते हैं। भारतीय पर्यटन विकास निगम ने राघव प्रयाग को सुन्दर बनाने का प्रयास किया हैं किन्तु भी यहाँ पर्याप्त सफाई न होने से गन्दगी का साम्राज्य है और पर्यटक यहाँ आकर स्वयं को अत्यन्त असहज अनुभव करता है।

निर्मोही अखाड़ा–समस्त चित्रकूट में लगभग छः अखाड़े हें यथा–संतोषी अखाड़ा, निरालम्बी अखाड़ा, पुरानी लंका, वेदांती आश्रम और पीली कोठी। किन्तु इन अखाड़ों में निर्मोही अखाड़ा सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

---

[2] ततो मंदाकिनीतीरं प्रत्युत्तीर्य स राघवः। पितुश्चकार तेजस्वी निर्वापं भ्रातृभिः सह।।
ऐंगुदं बदरैर्भिश्रं पिण्याकं दर्मसंस्तरे। न्यस्य नामः सुदुःखार्तौ कदन् वचनमब्रवीत।। (वाल्मीकि रामायण, 2.103., 28–29)

यहाँ 114 वर्षों से निरन्तर अखण्ड रामकीर्तन चल रहा है। इतना ही नहीं, यहाँ पर लूले, लंगड़े, अपाहिज और निर्धन व्यक्तियों के लिए भोजन की भी व्यवस्था है। कहा जाता है। कि रामवण वध के पश्चात अयोध्या जाते समय इसी स्थान के ऊपर से श्रीराम का पुष्पक विमान गया था।[3]

कामदगिरि परिक्रमा–कामदगिरि इच्छा पूर्ति करने वाला पहाड़ अथवा कामतानाथ पहाड़ी अत्यन्त पवित्र मानी जाती है। स्वयं राम जी ने इस पहाड़ी की पूजा की थी तथा यहाँ निवास किया था। इस पहाड़ी पर चढ़ने की मनाही थी, परन्तु श्रद्धाभाव से इसकी परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा में चार प्रमुख द्वार है, जिन्हें मुखार विन्द कहा जाता है। परिक्रमा प्रमुख द्वार से प्रारम्भ में चार प्रमुख द्वार है, जिन्हें मुखार विन्द कहा जाता है। परिक्रमा प्रमुख द्वार से प्रारम्भ होती है। यहीं पर भगवान की पूजा–अर्चना की जाती है और नारियल तथा इलाचयी दाने का भोग लगाया जाता है। इस प्रमुख द्वार पर स्व. महन्त प्रेमपुजारी जी ने दस वर्षों तक अपाहिजों और लूले–लंगड़ों को भोजन प्रदान किया था। अब उनके उत्तराधिकारी महन्त डॉ. पुरुषोत्तमदास जी यहाँ पर एक औषधालय संचालित करते हैं जहाँ निर्धनों को निःशुल्क औषधि प्रदान की जाती है।

कामतानाथ मन्दिर की प्रमुख मूर्ति बद्रीनाथ की है। यहीं पर पहला मुखारबिन्द है। बद्रीनाथ प्रतिमा के पार्श्व भाग में राम, लक्ष्मण और सीता की स्थानक प्रतिमाएँ हैं। यहीं पर दक्षिण की ओर मनसादेवी और अष्टभुजा देवी की मूर्तियाँ है। प्रमुख मन्दिर से आगे चलने पर परिक्रमा मार्ग पर एक पीपल वृक्ष मिलता है। अनुश्रुति है कि इस वृक्ष का स्वयं तुलसीदास ने लगाया था। भक्तजन अत्यन्त श्रद्धा से इसे प्रणाम करते हैं। कुछ भक्त यहाँ पैसा और अन्य सामाग्री भी समर्पित करते हैं। आगे बढ़ने पर द्वितीय मुखरबिन्द मिलता है। हयाँ पर भगवान से आर्शीवाद प्राप्त कर भक्तजन आगे बढ़ते हैं। परिक्रमा मार्ग पर एक कुण्ड मिलता है, जिसे अब पर्यटन विभाग की ओर से पक्का बना दिया गया है। इसे बिरजा कुण्ड कहते हैं। चित्रकूट माहात्म्य के अनुसार कामदगिरि से अनेक गंगाएँ प्रवाहित होती हैं, जिनमें से एक बिरजा गंगा है। अब यह गंगा लुप्त हो गई है और कुण्ड में बरसाती जल ही रहता है, जो ग्रीष्म ऋतु में सूख जाता है। यात्रीगण और पर्यटक इस कुण्ड के जल को पवित्र मानकर अपने सिरों पर इस का छिड़काव करते हैं।

साक्षी गोपालः–इस मन्दिर का निर्माण पाथर–कछार के राजा मोहन सिंह (1789–1827 ई.) में कराया था। इसे गोपाल मन्दिर और साखी मन्दिर भी कहा जाता है। मन्दिर में राधा कृष्ण का विग्रह प्रतिष्ठित हैं जो व्यक्ति परिक्रमा करने आते हैं, उनकी परिक्रमा के ये साक्षी होते हैं। इसीलिए इन्हें साक्षी गोपाल कहते हैं। मार्ग में अनेक छोटे–बड़े मन्दर मिलते हैं। तत्पश्चात वह स्थान मिलता है, जहाँ राम और भरत का मिलन हुआ।

भरत मिलाप :– यह पावन स्थल कामदगिरि परिक्रमा मार्ग के दक्षिणी भाग में है। इस स्थान को चरण पादुका भी कहते हैं। यहाँ गुम्बदाकार तीन मन्दिर है। पहले मन्दिर के स्थान पर राम–भरत का मिलाप हुआ। अतः यहाँ पर चरण–चिन्हों की अधिकता है। दूसरे मन्दिर के स्थान पर लक्ष्मण और शत्रुघ्न का मिलाप हुआ। तीसरे मन्दिर के स्थान पर माता कौशल्या और सीता का मिलाप हुआ। अनुश्रुति है कि राम–भरत मिलाप के समय पाषाण के दूषित हो जाने के कारण उनके चरण–चिन्ह अंकित हो गये। गोस्वामी तुलसीदास ने राम–भरत मिलन का वर्णन इस प्रकार किया है–

बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत–राम की मिलन लखि बिसरे सबहि अपान।।
(रामचरितमानस 2.240)

लक्ष्मण पहाड़ी–चरणपादुका से कुछ दूरी पर लक्ष्मण पहाड़ी है, जिस पर चढ़ने के लिए लगभग 150 सीढ़ियाँ हैं। कहा जाता है कि रात्रि में इसी पहाड़ी पर बैठकर लक्ष्मण श्रीराम की पर्णकुटी की सुरक्षा के लिए पहरा देते थे। यह पहाड़ी कामदगिरि के दक्षिण में है। पहाड़ी पर लक्ष्मण का एक मन्दिर, एक दालान और जल के लिए एक कुआँ है। यात्रीगण दालानंन के खम्भों से इस प्रकार भेंट करते हैं जैसे वे लक्ष्मण से भेंट कर रहे हों।

तृतीय मुखारबिन्द–लक्ष्मण पहाड़ी से से आगे बढ़ने पर तृतीय मुखरबिन्द की आकृति पर्याप्त बड़ी है।

चतुर्थ मुखारबिन्द–तृतीय मुखरबिन्द से आगे चलने पर चौथा और अंतिम मुखारबिंद मिलता है। मन्दिर मार्ग के किनारे पर ही स्थित है। मन्दिर में जाने के लिए छ' सीढ़ियों के बाद आँगन और गर्भग्रह है। मन्दिर का आकार छोटा है। गर्भग्रह में वेदिका के

[3] असौ सुतनु शैनेन्द्रश्चित्रचत्रकूटः प्रकाश्ते। अत्र मां कैकयीपुत्र प्रसादयितुमागतः।। (वाल्मीकि रामायण, 6.123.51)

ऊपर राधा–कृष्ण तथा कामतानाथ, दूसरी सीढ़ी पर राम, लक्ष्मण और सीता तथा अंतिम सीढ़ी पर कुछ शालिग्राम शिलाएँ रखी हैं। चौथे मुखरबिन्द के बाद परिक्रमा पूरी हो जाती है।

प्रमोदवन–रामघाट से लगभग 1 किलोमीटर पर चित्रकूट, सतना–मार्ग पर पयस्विनी नदी के किनारे प्रमोदवन है। इसका निर्माण रीवा नरेश महाराजा विश्वनाथ सिंह द्वारा कराया गया है। यहाँ पर श्री राम का मन्दिर है। यहाँ पर चित्रकूट विशेश क्षेत्र प्राधिकरण मध्यप्रदेश द्वारा वृद्धजनों के लिए एक सेवा सदन स्थापित किया गया है। तुलसी शोध पीठ का कार्यालय भी यहाँ पर है। प्रमोदवन अत्यन्त रमणीक स्थान है और पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त उपयुक्त स्थल है।

जानकी कुण्ड में स्व. संतश्री रणछोड़दास महाराज द्वारा स्थापित एक संस्कृत विद्यालय तथा रघुवीर का एक भव्य मन्दिर है। यहाँ पर्यटकों और राम भक्तों के लिए एक धर्मशाला भी है। ये समस्त संसीान रघुवीर न्यास द्वारा संचालित होते हैं।

स्फटिक शिला– रामघाट से 13 किलोमीटर ाअैर जानकी कुण्ड से लगभग 3 कि.मी. आगे बढ़ने पर सघन वृक्षावली से आवृत स्फटिकशिला नामक स्थान है। यहीं इन्द्र के पुत्र जयन्त ने भगवान् श्रीराम की शक्ति परीक्षा करनेके उद्देश्य से कौवा का रूप धर कर सीता के चरणों पर अपनी चोंच से प्रहार किया था। तुलसीदास ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है–

एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निजकरभूषन राम बनाये।
सीतहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिकशिला पर सुन्दर।।
सरुपतिसुत धरि वायस वेषा। सठ चाहत रघुपति बल देखा।।
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महामंदमति पावन चाहा।। (रामचरितमानस, 3.2–3)

यहाँ पर दो चमकीली शिलाएँ हैं, जिनमें राम, लक्ष्मण और सीता के चरण चिन्ह अंकित हैं। इसी प्रकार के चरण चिन्हों का उल्लेख चरणपादुका के सन्दर्भ में पहले ही किया जा चुका है। ये सभी चरणचिन्ह मानव निर्मित न होकर प्राकृतिक प्रतीत होते हैं।

अत्रि–अनसुया आश्रम–रामघाट से 14 कि.मी. दक्षिण में अत्रि–अनसुया आश्रम है। यहाँ की प्राकृतिक छटा अनुपम है। समीप ही मन्दाकिनी नदी प्रवाहित है। अत्रि आश्रम से पहले परमहंस आश्रम है, जिसके नीचे नदी के किनारे पर एक विशाला चट्टान पर माधव कवि द्वारा रचित एक लेख है, जिसके अक्षर इतने अधिक विकृत हो गये हैं कि उनका वाचन करना लोहे के चने चबाना जेसे हे। चित्रकूट से भरत के लौट जाने पर राम ने यहाँ अधिक समय तक रुकना उचित न समझा। अतः राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट छोड़कर अत्रि आश्रम पहुंचे।

सोऽत्रेराश्रममासाद्य तंववन्दे महायशाः।
तंचापि भगवानत्रिः पुत्रवत प्रत्यपद्यत।।
(वाल्मीकि रामायण 2.117.5)

रामायण के आधार पर कालिदास ने इसका वर्णन किया है।

अनिग्रहत्रासविनीतसत्त्वमपुष्पलिंगात्फलबन्धिवृक्षम्।
वनं तपः साधनमेतदत्रेराविष्कृतोदग्रतरप्रभावम्।।
(रघुवंश महाकाव्य 13.50)

अत्रि की पत्नी अनसुइया ने सीता के अंगों में सुगन्धित अंगराम लगाया था। रावण वध के पश्चात् पुष्पक विमान से अययोध्या लौटते समय भी कवि ने इस आश्रम का संकेत किया है–

अनसूयातिसृष्टेन पुष्पगन्धेन काननम्।
सा चकारांगरागेण पुष्पोच्चलितषटपदम्।।
(रघुवंश महाकाव्य 12.27)

उपर्युक्त उल्लेख इस आश्रम की स्थिति दक्षिण में स्थित उस पहाड़ी पर मानी जाती है, जिस पर आजकल अत्रि– अनसुया, दत्तात्रेय आदि की प्रतिमाएँ विराजमान हैं

यह आश्रम घने जंगलों के मध्य स्थित है। यहीं से मन्दाकिनी का उद्गम माना जाता है। आज से 50 साल पहले यहाँ आवागमन का कोई साधन नहीं था। अतः तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को यहाँ पैदल ही आना पड़ता था। यहीं पर परम संत परमहंस का आश्रम और उनकी समाधि है। अब यहाँ पर कई अत्याधुनिक मन्दिरों का निर्माण हो गया हे, जिसकी साज–सज्जा देखते ही नती है।

गुप्त गोदावरी–रामघाट से गुप्तगोदावरी की दूरी 17 कि.मी. है। यह स्थान चित्रकूट, सतना मार्ग पर गुप्तगोदावरी मोड़ पर है। यहाँ से एक अलग मार्ग गुप्त गोदावरी तक जाता है। यह सीान सती अनुसुइया से 10 कि.मी. दूर है। यहाँ पर दो प्राकृतिक गुफाएँ है; बिड़ी गुफा है और दूसरी छोटी गुफा है। इन गुफाओं में प्रवेश करने पर इनकी मनोहर छटा देखकर पर्यटक भाव विभोर हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुफाओं के प्रस्तर खण्डों पर विश्वकर्मा ने अद्भुत

चित्रकारी कर दी है। तुलसीदास का कथन है कि देवताओं ने राम–लक्ष्मण और सीता के निवास के लिए पहले से ही इनका निर्माण कर दिया है–

प्रथमहि देवहि गिरि गुफा राखे रुचिर बनाय।
रामकृपा निधि कछुक दिन वास करिहै आय।।

गुप्त–गोदावरी का उद्‌गम संभवतः यहाँ की बड़ी गुफा है। यही पर अनुसुया की छोटी बहिन ने तपस्या की थी, जिनकी प्रतिमा यहाँ कुण्ड का नाम जानकी कुण्ड हो गया। इसे सीताकुण्ड भी कहा जाता है। गुफा के भीतर से आने वाला पानी कही लुप्त हो जाता है, यह पता नहीं चलता।

दूसरी गुफा की अपेक्षा छोटी है। इसके प्रवेश द्वार पर पन्ना नरेश अमानसिंह का वि.सं. 1811 (1754 ई.) का एक विशाल लेखा गुफा के दोनों पार्श्वों में अंकित है। इस स्थान का पहला उल्लेख चित्रकूट माहात्म्य (2.32, 13.40.42) में मिलता है। यहाँ के प्रधान देव शिव है। उपर्युक्त अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजा आमनसिंह ने गुफा के द्वार पर एक शिवलिंग की स्थापना की थी। यह लिंग अद्यावधि विद्यमान है।

वनदेवी स्थान – रामघाट–हनुमान धारा मार्ग पर रामघाट से 3 कि.मी. की दूरी पर मंदाकिनी नदी के पार यह स्थान है। यहाँ पेदल अथवा आटो–रिक्शा से भी पहुंचा जा सकता है। अनुश्रुति है कि अयोध्या की कुलदेवी बनदेवी के रूप में राम–लक्ष्मण ओर सीता के वनवास काल में उनकी रक्षा के लिए तत्पर रहती थी। यह स्थान अत्यन्त सुन्दर और मनोरम है। यहाँ पर जानकी जी के चरण में अंकित 24 प्रकार के चिन्ह प्रदर्शित है।

हनुमान धारा–रामघाट से 4 कि.मी. की दूरी पर एक ऊँची पहाड़ी पर हनुमान की आमदकद प्रतिमा विद्यमान है। यहाँ तक पहुँचने के एिल ऊँची–नीची तीन सौ साठ सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ती है। अनुश्रृति है कि लंका दहन के पश्चात् तीव्र ऊष्मा से पीड़ित होकर हनुमान ने श्रीराम को अपने व्यथा से अवगत कराया। तब श्रीराम ने हनुमान को चित्रकूट जाने के लिए कहा। हनुमान ने चित्रकूट में हनुमान धारा स्थान को आरयस्थल बनाया। यहीं पर उनको ऊष्मा से शान्ति प्राप्त हुई। इस अनुश्रृति के प्रतीक स्वरूप आज भी हनुमान की बायी भुजा पर एक अविरल जलधारा गिरती है जिसका जल दो कुण्डों में एकत्र होता है। यह जल शीतल और मधुर है। हनुमान की बीाय भुजा पर गिरने वाली जलधारा का स्रोत अज्ञात है।

पंचमुखी हनुमान–हनुमान धारा के पार्श्व में ही पहाड़ी के ऊपर पंचमुखी हनुमान धारा के नाम से एक स्थान है, जहाँ पर पंचमुखी हनुमान का विग्रह विराजमान हैं यह स्थान भी रमणीय और मनभावन हैं।

सीता रसोई– हनुमानधारा से ऊपर की सौ सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् सीता रसोई नामक स्थान है। अनुश्रुति है कि यहाँ पर सीता, राम और लक्ष्मण के आहार की व्यवस्था करती थी।

कोटितीर्थ–यह मनोरम वन्यस्थल चित्रकूट पहाड़ी से सात कि.मी. पूर्व की ओर स्थित है। कोटितीर्थ जिस पहाड़ी पर है, उसे संकष्रण पहाड़ी कहा जाता है। यहाँ पर बहुसंख्यक ऋषि–मुनियों ने तप किया था। महाभारत में कहा गया है कि कोटितीर्थ जाने से सिद्धि लाभ होती है और यहाँ स्थान करने से पुरुष को हजार गोदान का फल प्राप्त होता है। कोटितीर्थ की परिक्रमा करने से भक्त को शिवलोक की प्राप्ति होती है। यहाँ प्राकृतिक जल का एक स्रोत है, जिसके जल से एक जलकुण्ड का निर्माण हो गया है। आज भी यह यथावत विद्यमान है। यहाँ आवागमन की सुविधा नहीं है। अतः पर्यटकों को पैदल ही जाना पड़ता है।

सिद्धाश्रम– कोटितीर्थ से दो कि.मी. उत्तर–पूव्र में सिद्धाश्रम है, जिसे अब बांके सिद्ध कहा जाता है। यह स्थान तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है और उत्तर–पूर्व दिशा से ही गमन योग्य है। 252 सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् घाटी की समतल भूमि के ऊपर एक प्राकृतिक गुफा है। महाभारत और पद्यपुराण में इसे भृतृस्थान और गृहस्थान कहा गया है–

ततो गच्छेत राजेन्द्र भतृस्थानमनुत्तमम्।
यत्रदेवो महासेनो नित्यंसंनिहितो नृप।
(पद्मपुराण 3.39.21, 12.20–21)

यह महासेन के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता हैं चित्रकूट माहात्म्य में सिद्धाश्रम को शिव के योगी रूप के लिए पवित्र कहा गया है। एक बार दर्शन कर लेने पर व्यक्ति की समस्त आकांक्षाएं पूर्ण होने के कारण ही इसे सिद्धाश्रम कहते हैं। यहाँ की गुफा में एक सिद्ध रहता था। देवताओं ने उससे वनवास काल में राम, लक्ष्मण ओर सीता के कुशल क्षेम, देखने का आग्रह किया। किन्तु यह कहते हुए कि राम को स्वयं मुझे दर्शन देना चाहिए देवों का अग्रह ठुकरा दिया। अन्ततः श्रीराम ने उसे दर्शन देकर कृतार्थ किया। यहाँ पर निर्मल जल वाला एक झरना है।

आवासीय सुविधाएँ – चित्रकूट में पर्यटकों के निवास के लिए उत्तरप्रदेश पर्याप्त मात्रा में धर्मशालाएँ हैं, जिनमें होटल जैसी आवासी सुविधाएँ उपलब्ध है। सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश की ओर से आने वाले पर्यटकों के लिए निम्नांकित आवास गृह सुलभ हैं–

मध्य प्रदेश चित्रकूट में उपलब्ध आवासीय व्यवस्था :–

1. पाल धर्मशाला, सतना बस स्टैण्ड
2. रामायण कुटी
3. पर्यटक आवास गृह
4. पी.डब्ल्यू. डी. बंगला
5. यात्रिका, जानकीकुण्ड
6. ठकुराइन धर्मशाला
7. माधव धर्मशाला
8. प्रमोदवन विश्रामगृह
9. गहोइ धर्मशाला, नयागांव
10. सोनी धर्मशाला, पुरानी लंका
11. जानकी कुण्ड धर्मशाला
12. रांची आश्रम, आरोग्य धाम के पास
    - पर्यटक आवास ग्रह, सीतापुर, उत्तर प्रदेश
    - जयपुरिया अतिथि विश्राम गृह, सीतापुर
    - पितृ स्मृति विश्राम गृह, रामघाट
    - सव. श्री मोतीलाल शुकला स्मृति विश्रामगृह रामघाट
    - श्री कामदगिरि भवन, रत्नावली मार्ग, रामघाट

धर्मशालाएँ :–

1. सोनी धर्मशालाएँ, बस स्टैण्ड के पास
2. कलकत्तेवाली धम्रशाला, सीतापुर
3. राठी कोठी
4. श्रीराम धर्मशाला
5. माँ जी की धर्मशला
6. आगरवाली धर्मशाला
7. गुजरात भवन

संदर्भ स्रोत :–

1. यावता चित्रकूटस्य नरः श्रृंगाण्यवेक्षते। कल्याणानि समाधन्ते न पावे कुरुते मनः। 2.54.30
2. ततो मंदाकिनीतीरं प्रत्युत्तीर्य स राघवः। पितुश्चकार तेजस्वी निर्वापं भ्रातृभिः सह।।
3. ऐंगुदं बदरैर्भिश्रं पिण्याकं दर्मसंस्तरे। न्यस्य नामः सुदुःखार्तौ कदन् वचनमब्रवीत।। (वाल्मीकि रामायण, 2.103., 28–29)
4. असौ सुतनु शैनेन्द्रश्चित्रचत्रकूटः प्रकाश्ते। अत्र मां कैकयीपुत्र प्रसादयितुमागतः।। (वाल्मीकि रामायण, 6.123.51)
5. पद्मपुराण 3.39.21, 12.20–21
6. रामचरितमानस, 2.133.1.3
7. रामचरितमानस, 2.133.1.3
8. रामचरितमानस 2.225.4
9. रामचरितमानस 2.240
10. वाल्मीकि रामायण 2.117.5
11. रघुवंश महाकाव्य 13.50
12. रघुवंश महाकाव्य 12.27
13. पद्मपुराण 3.39.21, 12.20–21